ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी का सचखण्ड गमन

श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी की
337 वीं जयन्ती के उपलक्ष में
आपको हार्दिक बधाई !!!

ਸੰਦੇਸ਼
क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लेखक : स. जसबीर सिंघ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

१ओंकार सतिगुर प्रसादि।।

माता साहिब कौर का दिल्ली प्रस्थान

श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने बंदा सिंघ बहादुर को पाँच प्यारों के नेतृत्त्व में दुष्टों को दण्डित करने के लिए भेज दिया। उसके पश्चात् ही आपने एक दिन अपनी पत्नी साहिब कौर जी को सुझाव दिया कि आप दिल्ली वापिस सुन्दरी जी के पास चली जाएं। इस पर उन्होंने बहुत आपत्ति की और पूछा, कि "आप ऐसा क्यों कह रहे हैं जब कि आप जानते हैं मैं आपकी सेवा और दर्शनों के बिना रह नहीं सकती।" उत्तर में गुरूदेव जी ने उन्हें बताया कि मेरा अन्तिम समय निकट है, मैं जल्दी ही सँसार से विदा लेने वाला हूँ। यह सुनकर उनको बहुत दुःख हुआ किन्तु उन्होंने प्रश्न किया, "आप तो स्वस्थ युवावस्था में हैं और अभी आप की आयु क्या है?" उत्तर में गुरूदेव जी ने उनको रहस्य बताया। प्राकृति के नियमानुसार समस्त शरीरधारियों को एक न एक दिन सँसार त्याग कर परलोक गमन करना ही होता है, भले ही वह पराकर्मी पुरूष हो अथवा चक्रवर्ती सम्राट, अत: इस नियम के बँधे हमें जाना ही है। इस में अल्प आयु, दीर्घ आयु का प्रश्न नहीं हैं। जब श्वासों की पूंजी समाप्त होती है तो कोई कारण प्रकृति बना देती है। किन्तु साहिब कौर जी इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुई। वह फिर से पूछने लगी कि आप के शरीर त्यागने का क्या कारण होगा?इस पर गुरूदेव जी ने उन्हें समझाते हुए कहा - मेरे साथ एक दुर्घटना होने वाली है बस वही कारण ही मेरे लिए वापिस प्रभु में विलीन होने के लिए पर्याप्त होगा किन्तु भावुकता में साहिब कौर जी ने पुन: प्रश्न किया। आप तो समर्थ पुरूष हैं। इस अनहोनी को टाला नहीं जा सकता अथवा इसके समय में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। उत्तर में गुरूदेव जी ने कहा - प्रकृति के कार्यो में हस्तक्षेप करना उचित नहीं होता भले ही यह हमारे लिए सम्भव है किन्तु हमें प्रकृति के नियमों के अनुसार होना ही शोभा देता है। उदाहरण के लिए द्वापर युग में श्री कृष्ण जी जानते थे कि उनकी हत्या एक शिकारी द्वारा भूल से की जाएगी किन्तु वह उसके लिए तैयार थे और सामान्य बने रहे। ठीक इसी प्रकार हम प्रभु लीला में विचरण करते हुए शरीर त्यागेगें। उन दिनों पँजाब से बाबा बुड्ढा जी के पोते भाई राम कुंवर जी तथा उनकी माता गुरूदेव जी के दर्शनों के लिए नांदेड़ आये हुए थे। जब वे पँजाब लौटने लगे तो गुरूदेव जी ने अपनी पत्नी साहिब कौर जी को उनके काफिले के साथ दिल्ली भेज दिया।

सम्राट द्वारा बहुमूल्य नगीना भेंट

श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी को सम्राट बहादुर शाह राजपुताने से लौटते समय नादेड़ नगर में मिलने आया। उस समय गुरूदेव जी गोदावरी नदी के तट पर एक रमणीक स्थल पर विश्राम कर रहे थे। बहादुरशाह ने गुरूदेव जी को एक बहुमूल्य नगीना भेंट किया। गुरूदेव जी नगीना देखकर प्रसन्न हुए किन्तु कुछ ही समय के अन्तराल में उसे उठाकर गोदावरी नदी के गहरे पानी में फेंक दिया। यह देखकर बहादुरशाह विचलित हो उठा। वह विचारने लगा कि यह फकीर लोग हैं, इन्होंने अमूल्य नगीना के महत्त्व को समझा ही नहीं और वह उदास हो गया। मन ही मन सोचने लगा कि मैंने इन बेकद्र लोगों को यह अद्‌भुत वस्तु क्यों उपहार में दी। तभी गुरूदेव जी ने उस का उदास चेहरा देखकर प्रश्न किया कि क्या नगीना वापिस चाहते हो?बादशाह ने कहा- हाँ। गुरूदेव जी ने उसे कहा नदी के पानी में उतर जाओ और वहाँ से अपना नगीना छाँट कर ले आओ। बादशाह ने पूछा कि आपकी बात का क्या तात्पर्य है?क्या वहाँ और भी नगीने हैं। गुरूदेव जी ने कहा - गोदावरी हमारा खजाना है, हमने तुम्हारी भेंट अपने खजाने में जमा कर दी थी किन्तु तुम्हें संदेह हो गया है। अत: स्वयँ ही अपने वाला नगीना चुनकर ले आओ। बहादुरशाह वचन मानकर नदी में उतरा और नदी की रेत में अनेकों नगीने देखने लगा। उसने कुछ एक को पानी से बाहर निकाल कर ध्यान से परीक्षण किया। वह सभी एक से एक बढ़ कर सुन्दर और अद्‌भुत थे। यह आश्चर्यजनक कौतुहल देखकर स्तब्ध रह गया और उसने सभी नगीने वापिस नदी में पुन: फैंक दिये और लौट कर बार बार नमस्कार करने लगा।

धनुर्विद्या की प्रतियोगिता का आयोजन

एक दिन नादेड़ में गुरूदेव जी का दरबार सजा हुआ था। तभी सम्राट उन से अपने वरिष्ठ अधिकारियों सहित मिलने आया। गुरूदेव जी से कुछ अधिकारीगण अनुरोध करने लगे, हे पीर जी ! हमने आपकी तीर अंदाजी की बहुत महिमा सुनी है। हमें भी प्रत्यक्ष यह करतब दिखाकर कृतार्थ करें। गुरूदेव जी ने उनका अनुरोध स्वीकार करते हुए एक विशाल प्रतियोगिता के आयोजन की घोषणा करवा दी, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के योद्धाओं को धनुर्विद्या के जौहर दिखाने का शुभ अवसर प्रदान किया जाएगा। बस फिर क्या था। स्थानीय प्रशासन की तरफ से कुछ अच्छे तीर अंदाजों को भेजा गया। कुछ आसपास के क्षेत्रों से आदिवासी भी आये। कुछ सम्राट की सैनिक टुकड़ियों के जवान भी इस प्रतियोगिता में भाग लेने आये। गुरूदेव जी ने एक विशाल मैदान में निशानदेही करवा दी और लक्ष्य भेदने के लिए कठपुतलियाँ निश्चित दूरी पर रखवा दी। निश्चित समय प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई किन्तु दूर के लक्ष्य को भेदने में सभी असफल हुए। अन्त में गुरूदेव जी ने जी दूर के लक्ष्य को भेद कर सभी की जिज्ञासा शान्त कर दी। इस प्रतियोगिता में

बहुत से बाण चालकों को पुरस्कृत किया गया जिसमें स्थानीय शासक फिरोज़खान की सेना के दो जवान भी थे। इनके तीर लक्ष्य के लगभग निकट गिर रहे थे। गुरूदेव जी इन पर बहुत प्रसन्न हुए और इन को पाँच पाँच मोहरें (स्वर्ण मुद्राएं) प्रदान की और उनका परिचय प्राप्त किया। इन दोनों सैनिकों ने गुरूदेव जी को बताया कि वह आपस में भाई हैं जो कि पँजाब के पठान कबीलों से सम्बन्ध रखते हैं और उसका नाम गुलख़ान तथा उसके भाई का नाम अताउल्ला ख़ान है। इस पर गुरूदेव जी ने कहा - तुम किसी बहुत बड़े योद्धा पिता के पुत्र प्रतीत होते हो?उत्तर में गुलखान ने बताया कि वह सैदेख़ान के सुपुत्र और पैंदे ख़ान के पोते हैं जो कभी समस्त देश में शूरवीर गिना जाता था। यह सुनकर गुरूदेव जी ने कहा - वही तो नहीं जो हमारे दादा जी द्वारा रणक्षेत्र में मार दिया गया था। वह कहने लगे आपने ठीक पहचाना, हम उसी योद्धा के पोते हैं। हमारे पिता भी सरहिन्द के राज्यपाल की सेना में थे जो कि आनन्दपुर के युद्ध में आपके हाथों वीर गति पा गये हैं। उनका बिना छल-कपट के सहज भाव का उत्तर सुनकर गुरूदेव जी बहुत प्रसन्न हुए और पूछने लगे। तुमको उनकी मृत्यु का कोई मलाल तो नहीं। वह बोले - नहीं गुरूदेव जी जी। आपने तो उनको रण भूमि में मारा है, वीर योद्धा वही होता है, जो रणक्षेत्र में दो हाथ देखता है, दो दिखाता है। इसमें मलाल कैसा?फिर उन्होंने बताया कि हमारी माता जी हमारे साथ हैं। वह हमें प्राय: बताती रहती है कि हमारे दादा पैंदे ख़ान को आपके दादा श्री गुरू हरगोबिन्द जी ने अपने बेटों की तरह पाला था। जब वह रणक्षेत्र में गुरू जी के हाथों मारे गये तो गलती उन्हीं की थी। आप पीर लोग हैं आपके लिए सभी एक समान हैं। आप किसी से शत्रुता नहीं रखते। इसलिए कई बार हम आपके प्रवचन सुनने आपके सम्मेलनों में आते रहते हैं। गुरूदेव जी सन्तुष्ट हुए और उन्होंने कहा - ठीक है तुम लोग हमारे यहाँ आते रहा करो क्योंकि एक योद्धा दूसरे योद्धा की कद्र करता है। इसलिए हमारे दिल में तुम्हारी कद्र है। इस प्रकार यह दो पँजाबी पठान गुरूदेव जी के शिष्य रूप में गुरू देव के निवास स्थल पर आने जाने लगे।

श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी पर घातक आक्रमण

गुरूदेव जी जी इन पंजाबी पठान भाईयों को शस्त्र विद्या में निपुण करने के लिए अभ्यास करवाते और विशेष गुर सिखाते। किन्तु यह सब गुरूदेव जी के निकटवर्ती सिक्खों को भला नहीं लगा। भाई दया सिंह जी ने गुरूदेव जी को सतर्क किया कि यह शत्रु पक्ष के व्यक्ति हैं, कभी भी अनिष्ट कर सकते हैं। आप इनको बढ़ावा न दें। परन्तु गुरूदेव जी ने उत्तर दिया। सब कुछ उस प्रभु के नियम के अनुसार ही होता है। हम विधाता के कार्यो में हस्तक्षेप नहीं कर सकते, बस यही हमारा विश्वास है।

एक दिन स्थानीय प्रशासन ने बकरीद के त्यौहार पर शस्त्र विद्या की प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमें दोनों पँजाबी पठान भाई विजयी हुए। इन भाइयों के प्रतिद्वन्द्वियों ने जो कि इन से बहुत ईर्ष्या

करते थे, स्थानीय सैनिकों के साथ मिलकर इन दोनों पर बहुत भद्दे व्यंग्य किये - कहिने लगे जो व्यक्ति तुम्हारे पिता-पितामय का हत्यारा है, तुम उसके शिष्य हो, तुम्हें तो डूब मरना चाहिए। पठान कहलाते हो और अपने पुरखों का बदला भी नहीं ले सकते कैसे योद्धा हो?हमें तो तुम नपुंसक प्रतीत होते हो, इत्यादि। यह कटाक्ष इन भाइयों के हृदय को छलनी कर गया। गुलखान इस प्रकार आवेश में आ गया और वह भावुकता में एकान्त पाकर गुरूदेव जी पर कटार से वार कर बैठा। उस समय गुरूदेव जी विश्राम मुद्रा में लेटे ही थे। गुरूदेव जी ने उसी क्षण अपनी कृपाण से गुलखान को दो टुकड़ों में काट दिया। आहट पाते ही संतरी सावधान हुआ और उसने बाहर से भागते हुए गुलखान के छोटे भाई अताउलाखान को दबोच लिया। उसने सारा भेद बता दिया। किन्तु जब सिक्खों ने गुरूदेव जी का गहरा घाव देखा तो मारे क्रोध के उसे भी वहीं उसी समय मृत्यु दण्ड दे दिया। गुरूदेव जी के वस्त्र रक्तरंजित हो गये थे तुरन्त शल्य चिकित्सक (जर्राह) को बुलाया गया। उसने गुरूदेव जी के घाव को सी दिया और मरहम पट्टी कर दी और पूर्ण विश्राम के लिए परामर्श दिया। यह सूचना सम्राट को भी भेजी गई जो गुरूदेव जी को कुछ दिन पहले ही मिलकर दिल्ली वापिस जा रहा था। उचित उपचार होने से गुरूदेव जी का घाव धीरे धीरे भरने लगा और वह लगभग पुन: स्वस्थ हो गये और साधारण रूप में विचरण करने लगे। उन्हीं दिनों हैदराबाद के कुछ श्रद्धालुओं ने गुरूदेव जी को कुछ विशेष शस्त्र भेंट किये जिनमें एक भारी भरकम धनुष भी था। शस्त्र-अस्त्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस भारी कमान को देखकर कुछ दर्शकों ने आशंका व्यक्त की कि यह कमान तो केवल प्रदर्शनी की वस्तु है। इस का प्रयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि इस कमान का प्रयोग करने वाले योद्धा का अस्तित्त्व ही सम्भव नहीं।

यह बात सुनकर कुछ सिक्खों ने कमान पर चिल्ला चढ़ाने का बार बार प्रयास किया किन्तु वह असफल रहे। यह देख गुरूदेव जी तैश में आ गये। उन्होंने सिक्खों से धनुष ले लिया और उस पर चिल्ला चढ़ा कर जोर से खींचा, जिस कारण अधिक दबाव पेट पर पड़ा और उनके कच्चे घाव खुल गये। रक्त तेजी से प्रवाहित होने लगा। यह अनहोनी देख कर सभी भयभीत हो गये। पुन: उपचार के लिए जर्राह को तुरन्त बुलाया गया। उसने घाव पुन: सी दिये। किन्तु गुरूदेव जी ने कहा कि अब सभी प्रयास व्यर्थ हैं, अब हमारा अन्तिम समय आ गया है और उन्होंने सचखण्ड गमन की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

भाई दया सिंह जी का निधन

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी को जब एक गुलखान नामक पठान ने घायल कर दिया तो सभी सिक्ख तुरन्त क्षण भर में इक्ट्ठे हो गये। भाई दया सिंह जी ने वैद्य को बुलवा लिया, जिसने उपचार आरम्भ कर दिया और जर्राह ने घाव सिल दिया। भाई दया सिंह उस समय निकट खड़े थे। वह गुरूदेव जी के घाव को

देखकर सिहर उठे, यह अघात सहन नहीं कर सके क्योंकि वह गुरूदेव जी से अति स्नेह करते थे। उनको बहुत शोक हुआ। वह शान्तचित गुरूदेव जी के पलंग के निकट ही विराज गये। वह गम्भीर चिन्ता में थे कि उनको मानसिक आघात हुआ और उसी के कारण उनकी हृदयगति रूक गई और वह शरीर त्याग गये। गुरूदेव जी की आज्ञा से उनकी अंत्येष्टि क्रिया वही सम्पन्न कर दी गई।

ग्रंथ साहब को गुरू पदवी प्रदान की

गुरूदेव जी के आदेश पर तुरन्त दीवान सजाया गया। उस समय गुरूदेव जी से गुरूपरम्परा के आगे बढ़ने के सम्बन्ध में पूछा गया। गुरूदेव जी ने वहाँ एकत्रित शोकाकुल संगत को सांत्वना देते हुए समझाया कि जैसे मनुष्य की मृत्यु के बाद भी उसकी आत्मा बनी रहती है, ठीक वैसे ही गुरूजनों के जाने के पश्चात् भी उनकी पावन वाणी उनकी आत्मा के रूप में हमारे पास विद्यमान है। भविष्य में खालसे को उसी वाणी से दिशा-निर्देश प्राप्त करने हैं और शब्द रूप में ही गुरू को पहचानना है। इस प्रकार गुरूदेव जी ने उसी समय दमदमे वाली ग्रंथ साहब की 'बीड़' (पोथी) का प्रकाश करने का आदेश दिया। स्वयँ बहुत धैर्य और शान्ति के साथ अपने निवास में गये। वहाँ उन्होंने साफ-सुथरी और सुन्दर पोशाक धारण की, लौट कर ग्रंथ साहब के सम्मुख खड़े होकर सभी संगत में सम्मिलित होकर अकालपुरूष को सम्बोधन कर अरदास की और ग्रंथ साहब को दण्ड्वत प्रणाम किया। तत्पश्चात गुरू परम्परा अनुसार ग्रंथ साहब की चार परिक्रमा की और कुछ सामग्री एक थाल में रख कर ग्रंथ साहब को भेंट किया। इस प्रकार सभी विधिवत गुरू मर्यादा सम्पूर्ण करते हुए उन्होंने गुरू पदवी ग्रंथ साहब को दे दी। इस प्रकार ग्रंथ साहब को गुरूआई प्रदान कर दी गई और आदेश दिया कि आज के पश्चात् देहधारी गुरू की परम्परा समाप्त की जाती है।

कुछ सिक्खों ने गुरूदेव जी से प्रश्न किया कि यदि आपके दर्शनों की अभिलाषा हो तो कैसे किये जायें? गुरूदेव जी ने स्पष्ट किया कि मेरी आत्मा ग्रंथ साहब में शरीर पंथ में विद्यमान रहेगा। किन्तु सिक्खों ने कुछ और विस्तृत जानने के लिए अन्य प्रश्न किये। एक सिक्ख ने प्रश्न किया कि सदैव पंथ के दर्शन कर पाना कठिन कार्य है क्योंकि विपत्तियों में खालसे का मिल बैठ पाना सम्भव नहीं लगता। ऐसे में आपके दर्शन कैसे होंगे? गुरूदेव जी ने समाधान बताया, जहाँ विकट परिस्थितियाँ हो तो केवल पाँच प्यारों के दर्शन मेरे दर्शन होंगे। यदि ऐसा भी सम्भव न हो तो स्वयँ तैयार होकर, पूर्ण शस्त्र धारण कर लेना और दर्पण में स्वयँ को निहारना, मेरे दर्शन होंगे। यदि किसी कारणवश हमारी आवश्यकता पड़े तो हमारे स्थान पर, पाँच तैयार-बर-तैयार सिक्ख पाँच प्यारे रूप होकर हमारा प्रतिनिधित्व करेंगे।

सचखण्ड गमन

गुरूदेव जी ने सिक्खों को एक विशेष तम्बू में चिता तैयार करने का आदेश दिया। जब चिता तैयार हो गई तो स्वयँ नित्य की भान्ति अपना कमर-कस सजाया। धनुष-बाण कन्धे पर रखा और बंदूक को दाहिने हाथ में पकड़ कर घोड़े पर सवार हो गये। जैसे शिकार खेलने चले हो किन्तु उन्होंने समस्त सिक्खों को अन्तिम बार 'वाह गुरू जी का खालसा, वाह गुरू जी की फतह' कह कर अन्तिम विदाई ली। फिर उस तम्बू की तरफ चल पड़े। जहाँ उन्होंने अपने लिए चिता सजवाई हुई थी। तम्बू के अन्दर किसी को जाने की आज्ञा नहीं दी। वहाँ घोड़े से उतर कर वे अन्दर गये। सिक्ख शोक और आश्चर्य में डूबे हुए मूर्ति की भान्ति खड़े रहे। गुरूदेव जी ने समाधि लगाई और चिता पर लेट गये। इस तरह वे ज्योतिजोत समा गए।

जाते हुए कह गये कि कोई उनकी यादगार न बनवाये। उनकी याद का असली स्थान तो सिक्खों का हृदय ही होना चाहिए। किन्तु खालसा उनके परोपकारों को कैसे भूल सकता था। बाद में गुरूदेव जी की याद में एक थड़ा (चबूतरा) बना दिया गया।

लेखक : जसबीर सिंघ

पाठकों के लिए विनती

1. पुस्तक को स्वयं पढ़ें तथा अन्य पाठकों को भी पढ़ाने का कष्ट करें।
2. आप को इस पुस्तक को पुनः प्रकाशित करवाने का अधिकार है। कृप्या यह सेवा निःशुल्क करें।

समाप्त

Download Free

निम्नलिखित वेबसाइट में दस गुरूजनों का सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत विस्तृत रूप में अवश्य देखें तथा पढ़ें।

www.sikhworld.info
or
www.sikhhistory.in

E-mail : info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

ਉਪਰੋਕਤ ਵੇਬ ਸਾਇਟ ਵਿੱਚ ਦਸ ਗੁਰੂਸਾਹਿਬਾਂਨ ਦਾ ਸੰਪੂਰਨ ਜੀਵਨ ਬਿਊਰਾ ਵਿਸਤਾਰ ਸਹਿਤ ਜ਼ਰੂਰ ਦੇਖੋ ਅਤੇ ਪੜੋ ਜੀ।

इस वैब साईट की विशेषता

इस में है एक विशाल सिक्ख संग्रहालय (Museum)

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन वृंत्तातों से सम्बन्धित घटना क्रमों के चित्रों से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन काल तक काल्पनिक तस्वीरों जो इतिहास के द्रसाती हैं तथा उनके नीचे हैं हिन्दी और पंजाबी में टिप्पड़ियां (फुटनोट) जो घटनाक्रम अथवा इतिहासिक प्रसंगों का वर्णन करती हैं।

नोटः – यह कार्य बच्चों की रुची को मद्देनज़र रख कर किया गया है ताकि वे सहज में अपना इतिहास जान सके। मुझे आशा है सिक्ख जगद् के किशौर अथवा युवक इस विधि से लभान्वित होंगे क्यों कि इस प्रणाली में आधी बात तस्वीरे कहती हैं तथा आधी बात निम्नलिखित फुटनोट कहते हैं। इस प्रकार पाठकों के मन में अपने इतिहास को जानने के प्रति रुची जागृत हो जाती है। अब आप इस के आगे सत्तारवीं + अठारहवीं + उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी के शहीदों के चित्र फुटनोट सहित देखेंगे। इस के साथ ही सिक्ख महापुरुषों अथवा महान व्यक्ति के लोग को भी देखेंगे। और टिप्पड़ियों द्वारा जाने जाएगे। कृप्या आप सिक्ख मयुजियम पर अवश्य ही किलिक किजिए।

नोट :–

1. यदि कोई इसे पुनः प्रकाशित करवाना चाहे तो वह निःशुल्क बटवा सकता है।

Download Free